

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनांक: 14-04-2025

जलियांवाला बाग नरसंहार की 106वीं वर्षगाँठ

बी.आर. अंबेडकर जयंती

भारत-इटली व्यापक रणनीतिक साझेदारी के साथ संबंधों को गहरा करना चाहते हैं।

अमेरिका-ईरान परमाणु वार्ता

पारंपरिक किस्म के बीजों को बचाना

संक्षिप्त समाचार

वायुमंडलीय नदियाँ

DRDO ने लेजर हथियार प्रणाली का परीक्षण किया

ADB ने भारत के वित्त वर्ष 26 के विकास पूर्वानुमान को संशोधित कर 6.7% किया।

अभ्यास अफ्रीका भारत प्रमुख समझी संलग्नता (AIKEYME)

अल्फ़ा घास

जलियांवाला बाग नरसंहार की 106वीं वर्षगाँठ

संदर्भ

- प्रधानमंत्री मोदी ने जलियांवाला बाग के शहीदों को श्रद्धांजलि दी।

जलियांवाला बाग नरसंहार क्या था?

- जलियांवाला बाग नरसंहार, जिसे अमृतसर नरसंहार भी कहा जाता है, 13 अप्रैल 1919 को हुआ और भारत के औपनिवेशिक इतिहास के सबसे अंधेरे अध्यायों में से एक था।
- बैसाखी उत्सव मनाने और रॉलेट एक्ट के अंतर्गत प्रमुख राष्ट्रवादी नेताओं डॉ. सैफुद्दीन किचलू और डॉ. सत्यपाल की गिरफ्तारी का विरोध करने के लिए, पुरुषों, महिलाओं एवं बच्चों की एक बड़ी भीड़ जलियांवाला बाग में एकत्रित हुई थी।
- कर्नल रेगिनाल्ड डायर ने ब्रिटिश भारतीय सेना के सैनिकों को हजारों शांतिपूर्ण जुटान पर बिना कोई चेतावनी या तितर-बितर होने का आदेश दिए गोली चलाने का आदेश दिया।
- आधिकारिक ब्रिटिश रिकॉर्ड के अनुसार, कम से कम 379 लोग मारे गए और कई घायल हुए।

रॉलेट एक्ट

- रॉलेट एक्ट, जिसे आधिकारिक रूप से अराजक और क्रांतिकारी अपराध अधिनियम, 1919 कहा जाता है, 10 मार्च 1919 को पारित किया गया।
- इसने ब्रिटिश सरकार को देशद्रोह के संदेह में व्यक्तियों को बिना मुकदमे के हिरासत में रखने के असाधारण अधिकार दिए।
- यह अधिनियम सर सिडनी रॉलेट की अध्यक्षता वाले देशद्रोह समिति की सिफारिशों पर आधारित था और 1915 के युद्धकालीन भारत रक्षा अधिनियम पर आधारित था।

जलियांवाला बाग नरसंहार पर ब्रिटिश प्रतिक्रिया

- मार्शल लॉ:** गोलीबारी के बाद पंजाब में मार्शल लॉ की घोषणा की गई।
- हंटर कमीशन:** ब्रिटिश सरकार ने अक्टूबर 1919 में नरसंहार की जाँच के लिए हंटर कमीशन, जिसे विकार जाँच समिति भी कहा जाता है, स्थापित किया।

- कमीशन ने जलियांवाला बाग में कर्नल रेगिनाल्ड डायर की कार्रवाई के लिए उनकी आलोचना की।
- डायर की निंदा की गई लेकिन कोई महत्वपूर्ण दंड नहीं लगाया गया। हालाँकि, उन्होंने उनकी सेना से इस्तीफे की सिफारिश की।

राष्ट्रवादी प्रतिक्रिया

- रवींद्रनाथ टैगोर:** नोबेल पुरस्कार विजेता कवि ने ब्रिटिश कार्रवाइयों की क्रूरता के विरोध में अपनी नाइटहुड की उपाधि त्याग दी।
- महात्मा गांधी:**
 - उन्होंने 1920 में असहयोग आंदोलन प्रारंभ किया, जिसमें भारतीयों से ब्रिटिश सामानों और संस्थानों का बहिष्कार करने का आग्रह किया।
 - उन्होंने काइजर-ए-हिंद की उपाधि, जो बोअर युद्ध के दौरान उनके काम के लिए ब्रिटिश द्वारा दी गई थी, भी त्याग दी।
 - यह आंदोलन भारत की स्वतंत्रता के संघर्ष में एक महत्वपूर्ण चरण था।

जलियांवाला बाग स्मारक

- जलियांवाला बाग एक स्मारक स्थल है जिसे जलियांवाला बाग राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट द्वारा बनाए रखा जाता है।
- स्थल में कई संरचनाएँ शामिल हैं जैसे स्मारक ज्वाला, गोली-चिह्नित दीवारें, और एक कुआँ जिसमें कई लोग गोलियों से बचने के लिए कूद गए थे।
- स्मारक में एक संग्रहालय और गैलरी भी है जो नरसंहार की घटनाओं और भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई के व्यापक संदर्भ को प्रदर्शित करती है।



Source: AIR

बी.आर. अंबेडकर जयंती

संदर्भ

- हाल ही में, भारत ने डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर की विरासत को अंबेडकर जयंती पर मनाया, जो जातिआधारित भेदभाव के विरुद्ध भारत की लड़ाई में एक प्रमुख व्यक्ति थे।

डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर (1891-1956) के बारे में

- जन्म: 14 अप्रैल, 1891; महू, मध्य प्रदेश, हिंदू महार परिवार में।
- वह ब्रिटिश सेना में सम्मानित व्यक्ति सूबेदार रामजी मालोजी सकपाल के 14वें पुत्र थे, जो संत कबीर के अनुयायी थे।

शिक्षा

- बॉम्बे विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान में बी.ए।
- कोलंबिया विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एम.ए. और पीएच.डी. (थीसिस: “नेशनल डिविडेंड फॉर इंडिया — ए हिस्टोरिक एंड एनालिटिकल स्टडी”)
- लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में आगे की पढ़ाई।
- उनकी थीसिस “इवोल्यूशन ऑफ प्रोविंशियल फाइनेंस इन ब्रिटिश इंडिया” के रूप में प्रकाशित हुई।

भारतीय संविधान के निर्माता

- संविधान सभा की प्रारूप समिति के अध्यक्ष।
- समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व के महत्व पर बल दिया।
- भारत के पहले कानून और न्याय मंत्री।
- 1951 में कश्मीर मुद्दे, भारत की विदेश नीति और नेहरू की हिंदू कोड बिल नीति पर मतभेद व्यक्त करते हुए मंत्री पद से त्यागपत्र दिया।
- 1954 में काठमांडू, नेपाल में ‘जगतिक बौद्ध धर्म परिषद’ में बौद्ध भिक्षुओं द्वारा उन्हें ‘बोधिसत्त्व’ की उपाधि दी गई।

प्रमुख लेखन और प्रकाशन

- मूकनायक (पाकिस्तान समाचार पत्र, 1920)।
- द प्रॉब्लम ऑफ द रूपी: इट्स ओरिजिन एंड इट्स सॉल्यूशन (1923)।

- बहिष्कृत भारत (समाचार पत्र, 1927)।
- एनिहिलेशन ऑफ कास्ट (1936)।
- द अनटचेबल्स: हू आर दे?
- हू वेयर द शूद्राज? (1942)।
- थॉट्स ऑन लिंग्विस्टिक स्टेट्स (1955)।

आर्थिक योगदान

- हिल्टन यंग कमीशन को उनकी सिफारिशों ने भारतीय रिजर्व बैंक की स्थापना में योगदान दिया।

कानूनी वकालत

- 1934 में, उन्होंने अग्रिल भागतीय वस्त्र श्रमिक सम्मेलन का बचाव किया और 1929 के ट्रेड डिस्प्यूट्स एक्ट की खामियों को उजागर किया।
- उनके दृष्टिकोण ने कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका के बीच संतुलन के साथ एक लोकतांत्रिक ढाँचे की स्थापना की।
- उन्होंने अनुच्छेद 32 में निहित ‘संवैधानिक उपचार के अधिकार’ को भारतीय संविधान का ‘हृदय और आत्मा’ माना।

अन्य

- बहिष्कृत हितकारिणी सभा (उर्फ आउटकास्ट्स वेलफेयर एसोसिएशन) की स्थापना 1924 में।
- महाड़ सत्याग्रह (1927)।
- नासिक में कालाराम सत्याग्रह (1930), अछूतों के लिए मंदिर प्रवेश आंदोलन।
- स्वतंत्र श्रमिक पार्टी का गठन (1936)।
- भारतीय बौद्ध महासभा की स्थापना (1955)।

पुरस्कार

- 1990 में, उन्हें मरणोपरांत भारत रत्न (भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान) से सम्मानित किया गया।

बीआर अंबेडकर और ‘जाति का विनाश’ जाति के विनाश की उत्पत्ति: 1936 में प्रगतिशील हिंदुओं की जातिपात तोड़क मंडल के तहत एक बैठक के लिए भाषण के रूप में मूल रूप से लिखा गया था, लेकिन इसके उत्तेजक सामग्री के कारण यह भाषण कभी नहीं दिया गया। इसके बजाय,

अंबेडकर ने इसे स्वयं प्रकाशित किया, जिससे यह भारत में जाति विरोधी विचार के लिए एक बुनियादी पाठ बन गया।

'जाति का विनाश' के मुख्य तर्क

• जाति के रूप में सामाजिक अत्याचार:

- अंबेडकर ने इस विचार को खारिज कर दिया कि जाति केवल श्रम का विभाजन है; इसके बजाय, उन्होंने इसे श्रमिकों का विभाजन माना — गहराई से पदानुक्रमित और दमनकारी।

• हिंदू शास्त्रों की आलोचना:

- उन्होंने हिंदू शास्त्रों, विशेष रूप से मनुस्मृति, की पवित्रता पर हमला किया, जो जाति भेदभाव और असमानता को वैध बनाते हैं।

• गांधी के दृष्टिकोण का अस्वीकार:

- अंबेडकर ने महात्मा गांधी के जाति पर विचारों, विशेष रूप से उनके वर्ण (समाज का चार-गुना विभाजन) के बचाव और हिंदू धर्म को इसके ग्रंथों को छोड़े बिना सुधारने पर खुलकर आलोचना की।

• धर्म एक सामाजिक शक्ति:

- अंबेडकर ने बल दिया कि किसी भी वास्तविक सुधार के लिए, हिंदू धर्म को एक कट्टरपंथी परिवर्तन से गुजरना होगा।
- उन्होंने उत्तेजक रूप से तर्क दिया कि हिंदू समाज को उन ग्रंथों को 'जला देना चाहिए जो असमानता का प्रचार करते हैं'।

• तर्कसंगतता और न्याय के लिए अपील:

- उदार और प्रबोधन आदर्शों से प्रेरणा लेकर, उन्होंने भारतीयों से उन परंपराओं को छोड़ने का आग्रह किया जो मानव गरिमा का उल्लंघन करती हैं और तर्कसंगतता, मानवाधिकार, एवं संवैधानिक नैतिकता को अपनाने का आग्रह किया।

एक आदर्श समाज का दृष्टिकोण

• स्वतंत्रता:

- यह सामाजिक मानदंडों से स्वतंत्रता को शामिल करता है जो किसी के विकल्पों को सीमित करते हैं और शारीरिक अत्याचार से स्वतंत्रता।

• समानता:

- अंबेडकर ने पूर्ण समानता को अपनाने के लिए बल दिया क्योंकि उन्होंने सोचा कि समाज की क्षमता को

अधिकतम करने के लिए जन्म से समान अवसर दिए जाने चाहिए।

• बंधुत्व:

- अंबेडकर ने 'सामाजिक एंडोस्मोसिस' या सभी समूहों के बीच सूचना के मुक्त आदान-प्रदान को बढ़ावा दिया और लोकतंत्र की नींव के रूप में भाईचारे को देखा।

बाद के आंदोलनों पर प्रभाव

• दलित पैथर्स (1970 का दशक):

- यह अंबेडकर के कट्टरपंथ से प्रेरित सांस्कृतिक अभिव्यक्ति और प्रतिरोध पर बल देता है।

• बहुजन समाज पार्टी:

- यह एक स्पष्ट रूप से अंबेडकरवादी विचारधारा के साथ उभरी, जिसका उद्देश्य दलितों और पिछड़े वर्गों के लिए राजनीतिक प्रतिनिधित्व था।

Source: IE

भारत-इटली व्यापक रणनीतिक साझेदारी के साथ संबंधों को गहरा करना चाहते हैं

समाचार में

- इटली के उप प्रधानमंत्री एंटोनियो तजानी ने भारत का दौरा किया ताकि दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय सहयोग को मजबूत किया जा सके।

समाचार के बारे में

- दोनों देशों ने भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारे (IMEEC) पर ध्यान केंद्रित करते हुए व्यापार, रक्षा, स्वच्छ ऊर्जा, और प्रौद्योगिकी में सहयोग को बढ़ाने के तरीकों पर चर्चा की।
- 2025-29 की संयुक्त रणनीतिक कार्य योजना (JSAP) के ढाँचे के अंतर्गत भारत-इटली सहयोग को गहरा करने पर बल दिया जाना चाहिए।

भारत-इटली संबंध

• ऐतिहासिक जुड़ाव:

- इटली के बंदरगाह शहर कभी प्राचीन मसाला व्यापार मार्ग पर महत्वपूर्ण नोड के रूप में सेवा करते थे, जो पूर्व और भूमध्य सागर को जोड़ते थे।

- विनीशियन व्यापारी मार्कों पोलो की 13वीं शताब्दी की भारत यात्रा दोनों क्षेत्रों के बीच लंबे समय से चली आ रही सभ्यतागत संपर्क का उदाहरण है।
- राजनयिक संबंध:**
 - भारत और इटली ने 1947 में राजनयिक संबंध स्थापित किए, जो ऐतिहासिक जु़ड़ाव और साझा सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित थे।
 - 2023 में, भारत और इटली ने अपने संबंधों को रणनीतिक साझेदारी में ऊंचा किया।
 - 2024 में भारत और इटली के बीच प्रारंभ की गई 2025-29 की संयुक्त रणनीतिक कार्य योजना उनके द्विपक्षीय संबंधों को गहराने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।
 - 2023 में इटली का चीन की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) से बाहर निकलना—G7 में इसका एकमात्र हस्ताक्षरकर्ता होने के बाद—यूरोप और इंडो-पैसिफिक में चीन की बढ़ती उपस्थिति पर भारत की चिंताओं के साथ मेल खाता है।
- आर्थिक सहयोग:**
 - द्विपक्षीय व्यापार 2023-24 में \$13.220 बिलियन पर रहा, जिसमें भारतीय निर्यात का मूल्य \$7.94 बिलियन था।
 - इटली यूरोपीय संघ में भारत का चौथा सबसे बड़ा व्यापार भागीदार है और 2000 से 2023 के बीच भारत में एफडीआई प्रवाह में 17वें स्थान पर है।
- रक्षा सहयोग:**
 - आईएनएस सुमेधा ने 2023 में सार्डिनिया के तट पर आईटीएस मोरोसिनी के साथ पासिंग एक्सरसाइज (PASSEX) में भाग लिया।
 - इतालवी नौसेना ने 2024 में भारत द्वारा आयोजित बहुराष्ट्रीय नौसेना अभ्यास मिलन 2024 में भाग लिया।
- बहुपक्षीय अभियान:**
 - दोनों देश बहुपक्षीयता का समर्थन करते हैं, और इटली ने भारतीय नेतृत्व वाले प्रमुख पहलों जैसे अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA), ग्लोबल बायोफ्यूल एलायंस (GBA), और भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारे (IMEEC) में भाग लिया है।

- सांस्कृतिक कूटनीति:**
 - योग से लेकर इतालवी व्यंजनों तक, भारत और इटली के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान एक अनूठा बंधन बनाते हैं।
 - 2023-27 की अवधि के लिए सांस्कृतिक सहयोग पर कार्यकारी कार्यक्रम 2023 में हस्ताक्षरित किया गया।
- भारतीय प्रवासी:**
 - इटली में भारतीय समुदाय का अनुमान 2 लाख है, जिसमें भारतीय मूल के व्यक्ति (PIOs) शामिल हैं।
 - 2023 में प्रवासन और गतिशीलता साझेदारी समझौता (MMPA) पर हस्ताक्षर किए गए, ताकि मौसमी और गैर-मौसमी श्रमिकों, शोधकर्ताओं, पेशेवरों और शिक्षाविदों के सुरक्षित और कानूनी प्रवासन की सुविधा मिल सके।

चुनौतियाँ

- संरचनात्मक व्यापार बाधाएँ:**
 - गैर-टैरिफ बाधाएँ, नियामक देरी, और रसद संबंधी प्रतिबंध दोनों देशों के बीच संभावित व्यापार वृद्धि को सीमित करते हैं।
- इतालवी नौसैनिक मामला (2012):**
 - इस मामले ने कूटनीतिक तनाव उत्पन्न किया, राष्ट्रीय संप्रभुता और कानूनी क्षेत्राधिकार पर चिंताओं के साथ रक्षा संबंधों को प्रभावित किया।
- सैन्य विक्री पर अलग-अलग नीतियाँ:**
 - इटली पाकिस्तान को सैन्य उपकरण बेच रहा है, जिसने दोनों देशों के बीच रक्षा मामलों में नीति विचलन की धारणा बनाई है।

आगे की राह

- संयुक्त रणनीतिक कार्य योजना 2025-29:**
 - इस रोडमैप का केंद्रित कार्यान्वयन व्यापार, नवाचार, शिक्षा, रक्षा और स्थिरता जैसे क्षेत्रों में क्षमता को अनलॉक कर सकता है।
- नवाचार और स्टार्ट-अप केनेक्शन को बढ़ावा देना:**
 - एआई, ग्रीन एनर्जी, बायोटेक और स्पेस पर ध्यान केंद्रित करते हुए संयुक्त इनक्यूबेशन सेंटर और टेक पार्क स्थापित करना।

- FDI प्रक्रियाओं एवं नियामक ढाँचे को सुव्यवस्थित करना ताकि भारत में इतालवी निवेश और इटली में भारतीय व्यवसायों के लिए एक अधिक पूर्वानुमेय, निवेशक-अनुकूल वातावरण को बढ़ावा दिया जा सके।
- इटली-भारत व्यापार, विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंच के दौरान, इटली ने एआई, सुपरकंप्यूटिंग, रक्षा, नवाचार और अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में सहयोग को गहराने पर बल दिया।
- भारत ने फैशन, लकड़ी सामान, फार्मास्यूटिकल्स, खाद्य प्रसंस्करण, ग्रीन टेक, पर्यटन, और विनिर्माण में सामंजस्य के नए क्षेत्रों को भी रेखांकित किया।

Source: AIR

अमेरिका-ईरान परमाणु वार्ता

समाचार में

- संयुक्त राज्य अमेरिका और ईरान ने तनाव बढ़ने के बाद ईरान के परमाणु कार्यक्रम पर वार्ता पुनः प्रारंभ कर दी है, जो राजनयिक संबंधों में संभावित सुधार का संकेत है।

पूर्व की वार्ता

- ईरान ने 2015 के परमाणु समझौते (JCPOA) से अमेरिका के हटने के बाद अमेरिका के साथ सीधी बातचीत से इनकार कर दिया था।
- जो बिडेन के कार्यकाल में अप्रत्यक्ष वार्ता हुई, लेकिन वह असफल रही और ईरान ने अपने परमाणु कार्यक्रम को तेज़ कर दिया।

ईरान का परमाणु कार्यक्रम

- ईरान परमाणु अप्रसार संधि का हस्ताक्षरकर्ता है, लेकिन 1979 की क्रांति के बाद इसने अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी के साथ सहयोग करना बंद कर दिया।
- ईरान पर गुप्त परमाणु हथियार कार्यक्रम चलाने के आरोप हैं, हालाँकि ईरान का दावा है कि उसका परमाणु कार्यक्रम शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए है।
- ईरान ने अलग-अलग स्तरों पर यूरेनियम को समृद्ध किया है, जिसमें 2010 में 19.75% और हाल ही में 60% शामिल है, जो हथियार-ग्रेड यूरेनियम (90%) के करीब पहुँच गया है।

क्या आप जानते हैं? :

- परमाणु ईर्धन और हथियारों के लिए यूरेनियम संवर्धन बहुत ज़रूरी है। प्राकृतिक यूरेनियम में केवल 0.7% U-235 होता है, जिसे परमाणु उपयोग के लिए समृद्ध करने की आवश्यकता होती है।
- रिएक्टरों (20% तक) या हथियारों (हथियार-ग्रेड के लिए 90%+) के लिए यूरेनियम को विभिन्न स्तरों तक समृद्ध किया जा सकता है।

2015 ईरान परमाणु समझौता

- संयुक्त व्यापक कार्य योजना (JCPOA) पर तेहरान, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के पाँच स्थायी सदस्यों और यूरोपीय संघ के बीच हस्ताक्षर किए गए थे।
- इसका उद्देश्य ईरान पर लगे प्रतिबंधों को हटाकर परमाणु संकट को हल करना था, जिसके बदले में ईरान अपनी परमाणु गतिविधियों को सीमित करेगा, जिसमें उसके सेंट्रीफ्यूज को कम करना, यूरेनियम संवर्धन को 3.67% तक सीमित करना और अपने कम समृद्ध यूरेनियम (LEU) भंडार को 300 किलोग्राम तक सीमित करना शामिल है।
- ईरान ने इस समझौते का तब तक पालन किया जब तक कि 2018 में राष्ट्रपति ट्रम्प के तहत अमेरिका ने वापस नहीं ले लिया और प्रतिबंधों को फिर से लागू नहीं कर दिया।
- जवाब में, ईरान ने अपने परमाणु कार्यक्रम को गति दी, यूरेनियम को 60% तक समृद्ध किया, जो हथियार-ग्रेड यूरेनियम की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

परमाणु हथियार की संभावना और संबंधित चिंताएँ

- यह अनुमान है कि यदि ईरान वर्तमान संवर्धन क्षमताओं को देखते हुए इसे करना चुनता है, तो महीनों के अन्दर एक तैनात करने योग्य परमाणु वारहेड विकसित कर सकता है।
- बढ़ती भंडार और कम होती ब्रेकआउट समय ने चिंताओं को जन्म दिया है।
- इजराइल ने ईरान की परमाणु प्रगति पर गंभीर चिंताओं को व्यक्त करते हुए, ईरान को परमाणु हथियार प्राप्त करने से रोकने के लिए सैन्य कार्रवाई की धमकी दी है।

- ट्रंप ने भी सुझाव दिया है कि यदि राजनयिक वार्ता विफल होती है, तो सैन्य कार्रवाई हो सकती है, जिसमें इजराइल किसी भी सैन्य अभियान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

नवीनतम घटनाक्रम

- हाल ही में, ईरान ने सैन्य, राजनीतिक और आर्थिक दबावों का सामना किया है, जिसमें क्षेत्रीय प्रभाव में आघात और खराब होती आर्थिक परिस्थितियाँ शामिल हैं।
- ट्रंप ने संवाद का प्रस्ताव रखा, यह कहते हुए कि अमेरिका ईरान को परमाणु बम प्राप्त करने की अनुमति नहीं दे सकता, जिसने ईरान को कूटनीति में शामिल होने के लिए प्रेरित किया।
- कमजोर स्थिति के कारण, ईरान ने वार्ता के लिए सहमति व्यक्त की।

आगे की राह

- JCPOA का पुनरुद्धार:** इसके लिए आपसी विश्वास निर्माण, प्रतिबंध राहत, और IAEA की निगरानी की आवश्यकता है।
- बहुपक्षीय गारंटी:** ब्रेकआउट परिदृश्यों को रोकने के लिए व्यापक अंतर्राष्ट्रीय सहमति आवश्यक है।
- क्षेत्रीय संवाद:** मध्य पूर्वी सुरक्षा ढाँचे में परमाणु अप्रसार प्रतिबद्धताओं को शामिल करना चाहिए।
- भारत की कूटनीतिक भूमिका:** एक जिम्मेदार क्षेत्रीय अभिकर्ताओं के रूप में, भारत शांतिपूर्ण परमाणु ऊर्जा और अप्रसार का समर्थन कर सकता है।

Source: IE

पारंपरिक किस्म के बीजों को बचाना

प्रसंग

- हरित क्रांति और आधुनिक कृषि नीतियों को अपनाने के बाद पारंपरिक बीज तेजी से समाप्त हो रहे हैं।

पारंपरिक बीज क्या हैं?

- पारंपरिक बीज, जिन्हें स्वदेशी या वंशानुगत बीज भी कहा जाता है, पीढ़ियों से स्वाभाविक रूप से विकसित और स्थानीय रूप से अनुकूलित होते हैं।

- ये बीज:
 - खुले परागण वाले होते हैं और किसान इन्हें बचा सकते हैं।
 - आनुवंशिक विविधता से समृद्ध होते हैं।
 - स्थानीय जलवायु और मिट्टी की परिस्थितियों के लिए अनुकूलित होते हैं।
 - स्थानीय खाद्य प्रणालियों में सांस्कृतिक रूप से समाहित होते हैं।

पारंपरिक बीजों के लाभ

- जलवायु प्रतिरोधकता:**
 - सूखा, बाढ़ और चरम तापमान का सामना करने में सक्षम।
 - कम सिंचाई और कम रासायनिक इनपुट की आवश्यकता।
- जैव विविधता संरक्षण:**
 - पारिस्थितिक संतुलन और भविष्य की फसल सुधार के लिए आवश्यक आनुवंशिक विविधता को बढ़ावा देना।
- पोषण मूल्य:**
 - बाजरा और दालों में पॉलिश अनाज की तुलना में अधिक फाइबर, प्रोटीन और सूक्ष्म पोषक तत्व होते हैं।
- आर्थिक स्थिरता:**
 - कम इनपुट लागत क्योंकि किसान बीजों का पुनः उपयोग कर सकते हैं और वाणिज्यिक बीज एवं कृषि रसायन बाजारों पर कम निर्भर होते हैं।
- सांस्कृतिक और विरासत मूल्य:**
 - पारंपरिक खाद्य प्रथाओं, त्योहारों और स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों में अभिन्न।
 - उदाहरण: नवारा चावल, केरल की एक पारंपरिक औषधीय चावल की किस्म, आयुर्वेदिक उपचार और मंदिर अनुष्ठानों में उपयोग की जाती है।

पारंपरिक बीजों में गिरावट के कारण

- उच्च उपज किस्मों (HYVs) की ओर नीति पक्षपात:**
 - हरित क्रांति की नीतियाँ कुछ मुख्य फसलों जैसे चावल और गेहूँ से अधिकतम उत्पादन पर केंद्रित थीं।

- सरकारी सब्सिडी, MSP, और खरीद ने HYVs को प्राथमिकता दी।
- **बाजार और उपभोक्ता वरीयताएँ:**
 - शहरी बाजार और सार्वजनिक खाद्य योजनाएँ पॉलिश, उच्च उपज वाले अनाज को प्राथमिकता देती हैं।
 - पारंपरिक अनाजों के बारे में जागरूकता की कमी के कारण कम माँग।
- **अपर्याप्त संस्थागत समर्थन:**
 - कमजोर सामुदायिक बीज बैंक और खराब संरक्षण बुनियादी ढाँचा।
 - पारंपरिक किस्मों में सुधार के लिए अनुसंधान एवं विकास में सीमित निवेश।
- **कृषि का वाणिज्यीकरण:**
 - इसने बीज निगमों और इनपुट-गहन कृषि मॉडल (रासायनिक उर्वरकों, यंत्रीकरण, सिंचाई आदि के उपयोग) के वर्चस्व का नेतृत्व किया है, जो संकर और आनुवंशिक रूप से संशोधित (GM) बीजों को प्राथमिकता देते हैं।

Source: TH

संक्षिप्त समाचार

वायुमंडलीय नदियाँ

समाचार में

- हाल ही में, संयुक्त राज्य अमेरिका के एक बड़े हिस्से में भारी वर्षा, तीव्र पवनों और गंभीर तूफानों का अनुभव हुआ, जो एक वायुमंडलीय नदी के कारण हुआ।

वायुमंडलीय नदियाँ

- ये नमी और हवा के संकीर्ण, तेज़-गति वाले बैंड हैं—जैसे आकाश में नदियाँ—जो उष्णकटिबंधीय महासागरों से भूमि तक बड़ी मात्रा में जलवाष्प परिवहन करती हैं।
- ये आमतौर पर 402 से 606 किमी चौड़ी और 1,600 किमी से अधिक लंबी होती हैं।
- ये अक्सर तीव्रता में तूफानों की तरह होती हैं और मध्य अक्षांशों में सबसे सामान्य हैं।

- एक प्रसिद्ध उदाहरण है पाइनेप्पल एक्सप्रेस, जो हवाई से अमेरिकी और कनाडाई पश्चिमी तटों तक नमी ले जाती है।
- हालाँकि, अमेरिका में हालिया तूफान कैरिबियन क्षेत्र से उत्पन्न हुआ।

महत्व और खतरे

- अधिकांश वायुमंडलीय नदियाँ क्षीण और लाभकारी होती हैं, जो आवश्यक बारिश और बर्फ प्रदान करती हैं।
- हालाँकि, ये भारी बारिश, तीव्र पवनों, बाढ़ और भूस्खलन जैसे गंभीर मौसम का कारण भी बन सकती हैं।

अध्ययन

- नासा के एक अध्ययन के अनुसार, भविष्य में वायुमंडलीय नदियाँ लंबी, चौड़ी और अधिक तीव्र होंगी, जिससे गंभीर बाढ़ के जोखिम में वृद्धि होगी।

Source: IE

DRDO ने लेजर हथियार प्रणाली का परीक्षण किया

समाचार में

DRDO ने आंध्र प्रदेश में Mk-II(A) लेजर-निर्देशित ऊर्जा हथियार (DEW) प्रणाली का सफल परीक्षण किया।

Mk-II(A) लेजर-निर्देशित ऊर्जा हथियार (DEW) प्रणाली

- यह प्रणाली DRDO के हाई एनर्जी सिस्टम्स एंड साइंसेज केंद्र (CHESS), हैदराबाद द्वारा अन्य प्रयोगशालाओं, शैक्षणिक संस्थानों और भारतीय उद्योगों के साथ मिलकर विकसित की गई है।
- इसमें ड्रोन, दुश्मन के सेंसर और एंटीना को तेज़ी एवं सटीकता से नष्ट करने की क्षमता है।
- इस उपलब्धि के साथ, भारत उन चुनिंदा देशों की सूची में सम्मिलित हो गया है, जिनमें अमेरिका, चीन, और रूस जैसी उन्नत क्षमताएँ उपस्थित हैं।
- यह कम लागत वाले ड्रोन खतरों का मुकाबला करने के लिए एक लागत प्रभावी समाधान प्रदान करता है, जिसकी परिचालन लागत केवल कुछ लीटर पेट्रोल के बराबर है।

- यह उच्च तीव्रता वाले लेजर बीम का उपयोग करके प्रकाश की गति से लक्ष्यों को निष्प्रभावी करता है, जिससे सहायक क्षति कम होती है और महंगे गोलाबारूद पर निर्भरता कम होती है।

महत्व

- DRDO ने जोर दिया कि जैसे-जैसे ड्रोन स्वार्म और बिना मानवयुक्त हवाई प्रणालियाँ प्रमुख खतरे बन रही हैं, लेजर-DEW पारंपरिक मिसाइल रक्षा प्रणालियों के प्रभावी विकल्प के रूप में उभर रहे हैं, जो उपयोग में आसानी, सटीकता और कम परिचालन लागत प्रदान करते हैं।

Source: TH

ADB ने भारत के वित्त वर्ष 26 के विकास पूर्वानुमान को संशोधित कर 6.7% किया

संदर्भ

- एशियाई विकास बैंक (ADB) ने एशियाई विकास आउटलुक 2025 में, FY26 के लिए भारत के GDP वृद्धि पूर्वानुमान को 7% से घटाकर 6.7% कर दिया है।

परिचय

- FY27 के लिए वृद्धि पूर्वानुमान 6.8% तय किया गया है।
- विकासशील एशिया और प्रशांत क्षेत्र की अर्थव्यवस्थाओं के 2025 में 4.9% की दर से बढ़ने की उम्मीद है, जो 2024 के 5% से थोड़ी कम है।

कारण:

- अमेरिकी टैरिफ में वृद्धि:
 - भारत के निर्यात पर उच्च टैरिफ लगाने से व्यापार और निवेश प्रवाह बाधित हो सकता है, जिससे घरेलू वित्तीय बाजार में अस्थिरता उत्पन्न होने की संभावना है।
- संरचनात्मक खाद्य मुद्रास्फीति:
 - मांग और आपूर्ति के रुझानों के बीच असंतुलन उच्च खाद्य मुद्रास्फीति में योगदान देता है और खाद्य आपूर्ति श्रृंखला की लचीलापन में सुधार के

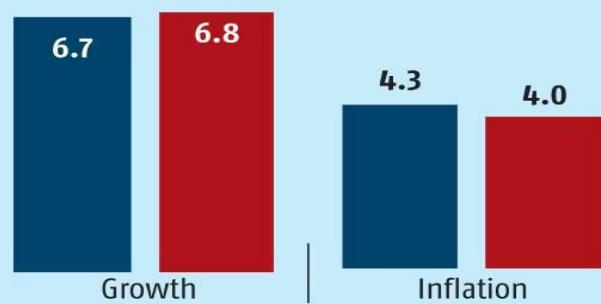
लिए प्रभावी नीतियों की अनुपस्थिति में मुद्रास्फीति संबंधी उम्मीदें बढ़ाता है।

शमन कारक:

- इन जोखिमों को भारत और अमेरिका के बीच एक व्यापार समझौते से कम किया जा सकता है, जिस पर बातचीत चल रही है।
 - अमेरिका को भारत का निर्यात GDP का केवल 2% है, जिससे इसका सीधा प्रभाव सीमित है।

ADB INDIA'S FORECAST

■ FY26 ■ FY27 (%)



Source: Asia Development Outlook April 2025

एशियाई विकास बैंक

- ADB एक क्षेत्रीय विकास बैंक है जिसकी स्थापना 1966 में सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए की गई थी। इसके 68 सदस्य हैं।
- यह एक बहुपक्षीय विकास बैंक है, जो अपने विकासशील सदस्य देशों को समावेशी आर्थिक विकास, पर्यावरणीय रूप से सतत विकास और क्षेत्रीय एकीकरण के माध्यम से गरीबी को कम करने और अपने लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने में सहायता करना चाहता है।
- मुख्यालय:** मनीला, फिलीपींस।

Source: BS

अभ्यास अफ्रीका भारत प्रमुख समुद्री संलग्नता (AIKEYME)

समाचार में

- पहले बड़े पैमाने पर बहुपक्षीय अभ्यास अफ्रीका-भारत प्रमुख समुद्री जुड़ाव (AIKEYME) का पहला संस्करण 13 से 18 अप्रैल 2025 तक आयोजित किया जा रहा है।

अफ्रीका-भारत प्रमुख समुद्री जुड़ाव (AIKEYME) अभ्यास

- AIKEYME, जिसका अर्थ संस्कृत में 'एकता' है, 13 से 18 अप्रैल 2025 तक छह दिनों के लिए योजना बनाई गई है।
- इसमें भारत और तंजानिया के सह-मेजबान के साथ-साथ कोमोरोस, जिबूती, केन्या, मेडागास्कर, मॉरीशस, मोज़ाम्बिक, सेशेल्स और दक्षिण अफ्रीका की भागीदारी शामिल है।
- यह भारत के दृष्टिकोण "महासागर" (MAHASAGAR) - सुरक्षा और वृद्धि के लिए पारस्परिक और समग्र प्रगति के साथ मेल खाता है।

महत्व

- इसका उद्देश्य भाग लेने वाली नौसेनाओं के बीच पारस्परिक संचालन और संयुक्त कार्यों को बढ़ाकर साझा क्षेत्रीय समुद्री चुनौतियों का समाधान करना है।
- यह भारत और अफ्रीकी देशों के बीच मजबूत और मैत्रीपूर्ण संबंधों को भी प्रतिबिंबित करता है।

Source: TH

अल्फल्फा घास

संदर्भ

- भारत में अमेरिका से आनुवंशिक रूप से संशोधित (GM) अल्फल्फा हे आयात की मंजूरी में देरी, चल रही भारत-अमेरिका व्यापार वार्ताओं में एक विवादास्पद मुद्दा बनकर उभरी है।
 - हालाँकि भारत की आनुवंशिक अभियांत्रिकी मंजूरी समिति (GEAC) से स्वीकृति मिल चुकी है, लेकिन कृषि मंत्रालय से अंतिम मंजूरी अभी तक लंबित है।

अल्फल्फा हे के बारे में

- इसे प्रायः 'चारागाहों की रानी' कहा जाता है और यह कृषि और पशुपालन में व्यापक रूप से उपयोग की जाने वाली एक अत्यधिक पौष्टिक और बहुमुखी फसल है।
- इसमें प्रोटीन, कैल्शियम और आवश्यक विटामिन भरपूर मात्रा में होते हैं, जिससे यह डेयरी मवेशियों, घोड़ों एवं अन्य पशुधन के लिए एक आदर्श चारा बन जाता है।
- इसका उच्च फाइबर कंटेंट पाचन में सहायता करता है और समग्र पशु स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है।
- अल्फल्फा एक बारहमासी दलहन है, जो अच्छी जल निकासी वाली मृदा और मध्यम जलवायु में फलता-फूलता है।
- यह मिट्टी में नाइट्रोजन को ठीक करता है, सिंथेटिक उर्वरकों की आवश्यकता को कम करता है और मृदा की उर्वरता को सुधारता है।

अमेरिका के साथ व्यापार वार्ता में अन्य खाद्य सुरक्षा मुद्दे

- रेडी-टू-ड्रिंक (RTD) अल्कोहल युक्त पेय पदार्थ:** भारत RTD कम अल्कोहल वाले पेय पदार्थों के लिए खाद्य सुरक्षा मानदंडों में ढील देने पर विचार कर रहा है, यह चिंता यूनाइटेड स्टेट्स ट्रेड रिप्रेजेंटेविं (USTR) द्वारा जताई गई है।
 - वर्तमान नियम 0.5-8% अल्कोहल की मात्रा की अनुमति देते हैं, लेकिन इस श्रेणी में 10-15% अल्कोहल की अनुमति देने के लिए चर्चा चल रही है।
- विहस्की आयात मानक:** USTR ने बॉर्बन और टेनेसी विहस्की जैसे अमेरिकी विहस्की उत्पादों के लिए स्पष्ट सुरक्षा की मांग की है।
 - भारत का FSSAI इन आयातों की अनुमति देता है, लेकिन आगे स्पष्टीकरण पर चर्चा की जा रही है।

Source: ET

